Vol 6 Issue 10 April 2017 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 IMPACT FACTOR : 4.6052(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | APRIL - 2017

GRT GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

बच्चों के खेल से खेल

डॉ. दिनेश प्रसाद साह
एसोसिएट प्रोफेसर सह अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
सी.एम.साइन्स कॉलेज, दरभंगा.

प्रस्तावना

आइए, सबसे पहले शिवपूजन सहाय की 'देहाती दुनिया' का एक चित्र आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं – ''थोड़ी देर में मिठाई की दूकान बढ़ा कर हमलोग घरौदा बनाते थे। धूल की मेड़ दीवार बनती और तिनके का छप्पर। दातून के खम्भे, दीया–सलाई की पेटियों के किवाड़, घड़े के मुहड़ की चूल्हा–चक्की, दीये की कड़ाही और बाबू जी की पूजा वाली आचमनी की कलछी बनती थी। पानी का घी, धूप के पिसान और बालू की चीनी से हमलोग ज्योनार तैयार करते थे। हमी लोग ज्योनार करते और हमी लोगों की ज्योनार बैठती थी। जब पंगत बैठ जाती थी तब बाबूजी भी धीरे से आकर, पाँत के अन्त में जीमने के लिए बैठ जाते थे। उनको बैठते देख हमलोग घरौंदा बिगाड़कर हंसते हुए भाग चलते थे। वह भी हंसते–हंसते लोट–पोट हो जाते और कहने लगते– ''फिर कब भोज होगा भोलानाथ?''

सियाराम शरण गुप्त की 'काकी' कहानी में श्यामू विशेश्वर से यह कहता है कि मुझे एक पतंग मंगा दो, पर पत्नी की मृत्यु के बाद अन्यमनस्क विशेश्वर कहता है, ''अच्छा मंगा दूंगा'', फिर वह उदास भाव से कहीं चला जाता है। लेखक द्वारा प्रस्तुत उस मनःस्थिति का चित्र देखिये– ''श्यामू पतंग के लिए बेचैन था। वह अपनी इच्छा किसी भी तरह रोक नहीं पा रहा था। विशेश्वर की कोट की जेब से एक चवन्नी का आविष्कार करके वह तुरंत वहाँ से भाग गया।''

वस्तुतः पतंग श्यामू इसलिए चाहता है कि काकी तक वह पतंग के माध्यम से अपनी बात कह सके। प्रेमचन्द की 'ईदगाह' कहानी का हामिद चिमटे को कंधे पर बंदूक की तरह रखकर जिस खेल को सामने रखता है वह खेल बड़े–बड़ों के जीवन–मूल्य पर भी भारी पड़ जाता है। उपर्युक्त दोनों प्रतिनिधि कहानियां उस परिवेश का द्योतन कराती है, जहां बचपन फलता–फूलता है। परिवार और समाज के लोग ही बच्चों के लिए मॉडल का काम करते हैं, जहाँ से बचपन व्यस्कावस्था तक का सफर तय करता है।

आठवें दशक में इन्दिरा माहेश्वरी लिखित ''वह लड़का'' (पराग, मई 1976) कहानी पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि उस समय के परिवेश में बच्चे कर्मठ, परिश्रमी एवं स्वाभिमानी हुआ करते थे। पढ़ाई के खातिर चिलचिलाती धूप में लॉटरी का टिकट बेचना और शाम को चाय की दूकान पर बरतन साफ करना उसे स्वीकार था, पर किसी की दया उसे कतई स्वीकार्य नहीं।

नौवें दशक की कहानियों में एक दोस्त दूसरे के लिए जान देने के लिए तैयार रहते थे। उदाहरणार्थ कृष्ण कुमार कौशिक की कहानी ''हमजोली'' बालहँस (मई, द्वितीय, 1997) का जिक्र किया जा सकता है। तब उनकी दोस्ती वास्तविकता के धरातल पर होती थी। परन्तु आज की दोस्ती इंटरनेट पर चैटिंग के द्वारा होती है, जिससे चीटिंग की बलवती संभावना होती है– ('नेट वाली लड़की' नरेन्द्र देवांगन, सुमन सौरभ, जनवरी, 2005)

आज जब सामाजिक विघटन से पारिवारिक इकाइयां खत्म हो रही हैं, घर–घर के बालक घरौंदो के समान बिखर रहे हैं, किसी के पास इतना वक्त नहीं कि वह अपने बालक की समस्या के बारे में गम्भीरता से विचारे। ''कहां खो गया वह बचपन, जिसमें बच्चा साहित्य–बोध के रूप में मां की लोरियां सुनता था, दादी–नानी की कहानियों में मस्त होकर रमता था, चाचा–ताऊ से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाता था। अपने हमउम्र भाई–बहनों के साथ मिलकर साहित्यिक अभिरुचि के बालगीत, खेल–अंत्याक्षरी, खेल– कहानियां, पहेलियां, समस्यापूर्ति, नाटक आदि बहुत कुछ करने का अनुभव पाता था, जहां उसे अपनी आत्माभिव्यक्ति के भरपूर मौके मिलते थे।''(1) हम देखते हैं कि ''आज एकल परिवारों के चलते बच्चों को अपने दादा–दादी, नाना–नानी के संरक्षण से दूर जाना पड़ा है। शहरों में पति–पत्नी दोनों नौकरियां करने के लिए विवश हुए तो बच्चों को किसी न किसी प्रकार की उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। फिर पति–पत्नी के झगड़ों के बीच बच्चा पिसने लगा।''(2) याद करें मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' के बंटी को – कितना विवश, कितना असहाय ! आज के एकल परिवार में बच्चा अकेला हो गया है और बच्चा अकेले कभी शांत होकर बैठ ही नहीं सकता। वह अपने साथी की तलाश में इधर–उधर भटकता है। कोई न कोई साथ तो उसे चाहिए ही। फिर उस साथी के साथ वह खेल के मैदान में जाना चाहता है। परन्तु दिन–प्रतिदिन शहरों के विस्तार एवं ऊंची–ऊंची अट्टालिकाओं ने इन खेल के मैदानों को लील लिया है, फलतः वह निराश हो जाता है और उसका पाला पड़ता है; ''उस एकांगी 'इडियट' बॉक्स से जहाँ हिंसा, मार–धाड़, सेक्स और जीवन की अन्य सामाजिक विसंगतियों से वह समय से पहले ही परिचित हो जाता है। धीरे–धीरे ये विसंगतियां स्वयं उसके जीवन का हिस्सा बन जाती है।''(3)

प्राचीन समय में मनोरंजन के लिए गुल्ली–डंडा, कबड्डी, लुका–छिपी, फुटबॉल इत्यादि खेल हुआ करते थे, इनसे जहाँ उनका स्वस्थ मनोरंजन होता था, वहीं उनका स्वास्थ्य भी दुरुस्त रहता था। लड़कियों के लिए भी विभिन्न प्रकार के खेल, जैसे– रस्सी–कूद, मिट्टी का घरौदा बनाना,

गुड्डे–गुड़िया का ब्याह रचाना जैसे अनेक खेल होते थे, जिनसे मनोरंजन के साथ भावी जीवन की तैयारी भी होती थी। इस बात को परखने के लिए खिलौनों में मग्न किसी बच्ची को उसे पता लगे बिना, गौर से निहारिये। किस तरह एक बच्ची गुड्डे–गुड़िया का ब्याह रचाती है और अपनी प्यारी–सी गुड्डी रानी को विदा करके रीति–रस्मों और जिम्मेदारियों को निभाने में हासिल सुख की वयस्क अनुभूति करती है। कहीं वह सोफा सेट, कहीं मेज, कहीं फ्रीज, कहीं टी.वी., कहीं आलमारी, कहीं गैस, कहीं बरतन सजाकर सबके सोने, बैठने और खाने की व्यवस्था करके न केवल एक सुघड़ गृहिणी की भूमिका निभाती है बल्कि भरे–पूरे घर की कल्पना भी साकार करती है।

परन्तु दुर्भाग्यवश न केवल घरों में माँ–बाप द्वारा और न ही बच्चे के विकास के लिए जिम्मेदार अन्य पक्षों द्वारा खेल–खिलौनों को अपेक्षित सम्मान और महत्त्व दिया जाता है, बल्कि बच्चों के मनोविज्ञान से अनभिज्ञ आम घरों में उनके अभिभावक बच्चों को खेलने से रोकते भी हैं और कहते हैं– खेल के बदले इतना ही समय अगर पढ़ने में लगाओ तो तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल होगा। उन्हें शायद इस बात का ज्ञान नहीं है कि खेल बच्चे के मानसिक विकास एवं उनके सर्जनात्मक सोच और प्रतिभा पैदा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। किन्तु इसके विपरीत कुछ माता–पिता की मात्र यह सोच रहती है कि ''खेलोगे कूदोगे होगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नबाब।'' उनकी लालसा होती है ऊंची और महंगी शिक्षा दिलाने की। इसके लिए वे उसे कॉन्वेंट अथवा इंग्लिश मीडियम स्कूलों में भर्ती कराते हैं, जहाँ इन स्कूलों के संचालक बच्चों के कंधों पर बस्ते का भारी बोझ लाद देते हैं। ''उनके नाजुक कंधों पर भारी बोझ डालकर हम उन्हें समय से पूर्व ही परिपक्व बनाने में लगे हैं, जो उनके साथ क्रूर मजाक है।''(4)

कुछ अभिभावक खिलौनों को बच्चों के लिए विलासिता और ज्यादा हुआ तो कुछ समय के लिए पीछा छुड़ाने और उन्हें 'व्यस्त' रखने की चीज समझते हैं। अमीर घरों वाले मंहगें खिलौने सिर्फ शो केश की शोभा बढ़ाने एवं दूसरों पर अमीरी का रौब गांठने की चीज समझते हैं।

जैसे–जैसे उपभोक्तावादी संस्कृति का हम पर हमला बढ़ता जा रहा है, समाज के साथ–साथ खेल भी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की गिरफ्त में आते जा रहे हैं। विज्ञापनी दुनिया में खेल कहीं खो गया है। ''पहले जहाँ बच्चों के मनपसंद खेल– कबड्डी, खो–खो, लंबी कूद आदि हुआ करते थे, आज इन पारंपरिक खेलों की जगह धीरे–धीरे क्रिकेट और घर में बैठकर ही खेले जाने वाले विडियोगेम ने ले ली है। विडियोगेम का जादू आज बच्चों के सिर चढ़कर बोल रहा है। बदलते परिवेश के साथ ही इसने आज व्यावसायिक रूप भी अख्तियार कर लिया है और शहर के पॉश इलाकों में खुलने वाली मल्टीप्लेक्स तथा शॉपिंग कॉम्पलेक्सों में इनके गेम सेंटर भी खुल गये हैं। यहाँ पर सुबह से शाम तक बच्चों और बड़ों की भीड़ लगी रहती है, बड़ी स्क्रीन पर गेम खेलने, मोटर साइकिल चलाने और कार चलाने आदि की।''(5) हम देखते हैं कि इन सबके पीछे बच्चों का खेल नहीं, पैसों का खेल है। हम बचपन में लौटें और झांककर देखें किसी ग्रामीण मेले के दृश्य को ! हजारों लोग एकत्र है तथा पूरे आनन्द एवं जोश से दो पहलवानों को दंगल में पेंच भिड़ाते देख रहे हैं– लोगों की शाबाशी पहलवानों के जोश को द्विगुणित करने के लिए काफी है। इस दंगल के लिए लोग महीनों प्रतीक्षा किया करते थे। उस समय बहुसंख्यक लोग प्रतिदिन बेनागा हुए गांव के बाहर बने अखाड़ों में अभ्यास के लिए जाते थे। बहुत पहले गांवों–शहरों में कठपुतलियों के द्वारा भी बच्चों का मनोरंजन करने की परम्परा रही है। जादू व सरकस के खेल भी बच्चों को बहुत भाते थे। आज भी सरकस व जादू के करिश्में देखकर बच्चे रोमांचित होते हैं, किन्तु यह सब आज पीछे धकेला जा रहा है।

याद करें उन दिनों की जब हम बाजार से खिलौने कम या नहीं के बराबर खरीदते थे और अपने हुनर से फालतू चीजों को जोड़कर खुद खिलौने बनाते थे। कैसे– कैसे खिलौने– माचिस की खाली डिबिया से रेलगाड़ी, सोफा सेट, सरबी व पॉलिश की डिबिया से तराजू, सरकंडे को छील–तराशकर कुर्सी और मेज, रद्दी कागज की नाव और पर्श, गेद, टोपी, हवा झेलने वाला पंखा, हवाई जहाज वगैरह–वगैरह। तब खेल– खिलौनों की दुनियां आज के धूम–धड़ाके, हू–हू, धांय–धांय करने वाले आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक, कम्प्यूटरी हिंसक खिलौनों से एकदम अलग होती थी। 'देहाती दुनिया' (शिवपूजन साहय) का यह चित्र इसकी जीवन्त अभिव्यक्ति करता है, ''कभी–कभी हमलोग बारात का भी जुलूस निकालते थे। कनस्तर का तम्बूरा बजता, अमोले को घिसकर शहनाई बनायी जाती, टूटी चूहेदानी की पालकी बनती, हम समधी बनकर बकरे पर चढ़ लेते और चबूतरे के एक कोने से चलकर बारात दूसरे कोने में जाकर दरबाजे लगती थी। वहां काठ की पटरियों से घिरे, गोबर से लिपे, आम और केले की टहनियों से सजाये हुए छोटे आंगन में कुल्हिये का कलसा सजा रहता था। वहाँ पहुंच कर बारात फिर लौट आती थी। लौटने के समय खटोली पर लाल ओहार डालकर उसमें दुलहिन को चढ़ा लिया जाता था। लौट आने पर बाबू जी ज्योंही ओहार उघार कर दुल्हिन का मुख निरखते थे, त्योंही हमलोग हंसकर भाग जाते थे।''

पहले मिट्टी के शेर, मिट्टी के फल और सब्जियां, मिट्टी के दूल्हा–दुल्हन, मिट्टी के कप–प्लेट, कटोरियां और पतीली बरसों तक भारतीय बच्चों के मनभावन खिलौने रहे। फिर एक दौर एलुमिनियम के सस्ते खिलौनों का आया और एलुमिनियम का बना किचेन–सेट, लड़कियों का मनभावन खेल–खिलौना बना रहा। एक ओर इन खिलौनों ने बच्चों की अपनी सभ्यता, संस्कृति और लोकजीवन से जोड़ा तो दूसरी ओर इनके निर्माण में लगे लोगों की रोजी–रोटी भी कायम रही। आज साम्राज्यवादी गिरफ्त के चलते न तो रोजी–रोटी का सवाल हमारे सामने आ पाता है, न स्वस्थ खेलों का। अस्सी के दशक से इस क्षेत्र में मल्टीनेशनल कंपनियों के तेजी से होते प्रवेश ने हमारे इस पारम्परिक खेलों एवं खिलौनों की दुनिया को एकदम संकुचित कर दिया। धरती और जीवन से जुड़े ये खिलौने सिर्फ देहाती मेलों में नुमाइश तक ही सिमट कर रह गए। इस कम्पनियों ने 'लर्न विद फन' के सिद्धान्त पर निर्माण की कला–संस्कृति की चमक–दमक और गलैमर का प्रदशन करने वाले वाहनों और हिंसा–प्रतिहिंसा का सबक सिखाने वाले हीमैन, बन्दूकों, तोपों और टैंकों को बाजार में उतारकर सॉफ्ट ट्वाइजों को एक्शन ट्वाइज के द्वारा बहुत पीछे छोड़ दिया।

आज पढ़ाने की जिद ने बच्चों के अन्दर कॉमिक्स की दुनिया भर दी है। कॉमिक्सों के मायाजाल ने बाल–साहित्य की तरफ से बच्चे का ध्यान हटाकर उसे अपने मायाजाल में जकड़–सा लिया है। जब दुनिया भर में टी.वी. व निजी चैनल शुरू हुए तो सुपरमैन, मिक्की माउस जैसे कॉमिक्सों पर फिल्में बनने लगी। कार्टून फिल्में भी खूब बनी एवं दिखाई जाने लगी। शक्तिमान, कैप्टन व्योम, जूनियर जी, आर्यमान, अलिफ लैला, शांता बारबरा, हार्ट–बी, बैताल पच्चीसी, चन्द्रकान्ता जैसे धारावाहिकों ने बच्चों को ऐसी दुनिया में पहुंचा दिया जो अवास्तविक है। इन धारावाहिकों का एकमात्र उद्देश्य जमकर व्यवसाय करना है, जो तंत्र–मंत्र, भूत–प्रेत, जिन्न–जिन्नात, चुड़ैलों, राक्षसों और अविश्वसनीय पात्रों के द्वारा बच्चों को आकर्षित कर सम्मोहित कर रहे हैं, जिससे बच्चे गुमराह हो रहे हैं।

अब टी.वी. एवं केवल संस्कृति के मकड़जाल, इंटरनेट, कार्टून–नेटवर्क, ऐनिमेशन फिल्में, सी.डी. और वीडियोगेम्स की चकाचौध एवं आकर्षण ने बच्चों को अपने मोहपाश में ऐसे बांध लिया है कि उनको जिस्म की वर्जिश कराने वाले मैदानी खेलकूद को उनसे बिल्कुल ही छीन लिया है। ले दे कर देखें तो एकमात्र क्रिकेट ही ऐसा खेल है जो शहर से लेकर कस्बों एवं गांवों तक सभी बच्चों को लुभाता है। गौर करें तो इसका कारण यह खेल नहीं बल्कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों का मायाजाल है। इसने बाकी सारे खेलों को लगभग खत्म कर दिया है। एक अध्ययन में पाया गया है कि बच्चों में खेलकूल की आदत करीब–करीब खत्म हो गई है। इस अध्ययन में शामिल 42.41 फीसदी बच्चों ने बताया कि वे रोजाना चार घंटे से ज्यादा समय टी.वी. देखते हैं, जबकि 9.25 फीसदी बच्चों का कहना था कि वे खलने के लिए कभी घर से बाहर नहीं जाते।

टी.वी. चैनलों के द्वारा परोसा जा रहा पश्चिमी शैली का रोमांस, कच्ची उम्र के स्कूली बच्चों में असमय यौन भावना उभार रहा है। असमय उद्वेलित यौन भावनाएं टी.वी. चैनल का सीधा उत्पाद है। इसका परिणाम यह हुआ है कि छात्र–छात्राओं में दोस्ती को लेकर होड़ शुरू हो गई है। एक तबका ऐसा है जिसमें यदि किसी लड़के व लड़की का यौन समागम नहीं हुआ है, यानी वर्जित है तो वे शर्मिंदगी महसूस करते हैं। हीन भावना से उबरने के

लिए कई बार वे ऊटपटांग प्रयोग कर डालते हैं। कुछ नशे की ओर उन्मुख हो जाते हैं इसकी प्रवृत्ति के कारण स्कूल–कॉलेजों में पढ़ाई के समय छात्र रेस्तरां, पार्क व फास्ट फूड सेन्टर पर दिखाई देते हैं। हाल ही में दिल्ली शहर के कई पब्लिक स्कूलों में कार्यशालाएं आयोजित की गईं जिसमें पाया गया कि ग्यारवीं कक्षा के अधिकांश किशोरों को पोर्नोग्राफी साइट व यौन शब्दावली के बारे में पता था। वहीं 'एक्सप्रेशन' संगठन के अध्ययन में पाया गया कि स्कूलों में थोड़ी बड़ी उम्र के किशोर नियमित रूप से परस्पर सहमति से यौन सम्बंध बनाते हैं। वरिष्ठ यौन चिकित्सक डॉ. जितेन्द्र नागपाल ने बताया कि 12 से 15 साल तक के किशोरों में सेक्स भावना तीव्र होती है। इसलिए आज हमारे सामने ''सबसे बड़ी चिन्ता यही है कि दूरदर्शन और केबल टी.वी. से जो 'नंगई' बरसाई जा रही है उससे बच्चों के मन को कैसे बचाए?''(6) आज भारत के बच्चे भगतसिंह, महात्मा गांधी, चन्द्रशेखर आजाद, रामकृष्ण परमहंस, शिवाजी, महाराणा प्रताप आदि नहीं बनना चाहते, वे सुपरमैन, शक्तिमान, टारजन, एक्शन हीरो, अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान, गोविन्दा की तरह तो लड़कियां ऐश्वर्या, करिश्मा, लारा दत्ता की तरह बनना चाहती हैं। इसे लगातार बढ़ावा दिया जा रहा है।

प्राचीन कथाओं में भी अच्छे–बुरे चरित्र थे। रामायण में रावण है तो महाभारत में दुर्योधन–दुःशासन आदि पात्र हैं जो सदा अनीति एवं पाप पर चलते हैं, किन्तु इन्हें अतिरंजित चित्रित नहीं किया गया। रावण की लंका खाक होती है। सौ कौरव न सिर्फ पराजित होते हैं बल्कि नष्ट हो जाते हैं, किन्तु आज कॉमिक्सो, फिल्मों व सीरियलों में अनैतिक कार्य करने वाले पात्रों को ही प्रमुखता मिलती है जबकि आज अधिक जरूरत इस बात की है कि कथा पढ़–सुन और देख कर बच्चे अपराधी न बनें, अंधविश्वासी, कायर, धूर्त, भाग्यवादी न बनें। सामने कठोर समय है, उसकी कठोर समस्याएं हैं, वे हवाबाजी से हल नहीं हो सकेंगी।

अमरचित्र कथा के सम्पादक अनन्त पै कहते हैं कि ''चाहे चित्र कथाएं हों या टी.वी. के कार्यक्रम; मनोरंजन मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।''(7) किन्तु आज 'मनोरंजन' से ही दुनिया के कठोर यथार्थ का सामना नहीं किया जा सकता। इस यथार्थ का सामना झूठे साहस से भी नहीं हो सकेगा, जैसे कि कॉमिक्सों और सीरियलों में दिखाया जा रहा है। आज जरूरत है, यथार्थ को उसके समूचे वजूद में समझने और उसका यथार्थवादी हल निकालने की। सारांशतः कहा जा सकता है कि जहां चबूतरे का कोना ही नाटक–घर बनता हो, बाबू जी जिस चौकी पर बैठकर नहाते हों, वही रंगमंच बन जाता हो, वहां आज क्या हो रहा है? दादी–नानी पता नहीं कब 'काकी' बनकर ऊपर चली गई। श्यामू ने अब हाथों में बंदूक थाम लिया है। अब तो वह चैटिंग के साथ चीटिंग भी करता है। पोर्नोग्राफी का मजा तो लेता ही है। आचार्य शिवपूजन सहाय की 'देहाती दुनिया' नयी दुनिया की चकाचौंध में खो गयी–सी लगती है। लगता है अब हमारी पीढ़ी के लोग ही पतंग पर संदेश भेजेंगे कि ''काकी'' मैं बहुत उदास हूँ, तुम्हारी कहानियां तो अब अतीत बन चुकी है। हो सके तो फिर अपनी कहानियाँ सुनाने लौट आओ।

संदर्भ :

1.त्रिपदा– संपादक, डॉ. मधु पंत, राष्ट्रीय बालभवन, नई दिल्ली, पृ.– 11
2.त्रिधारा– संपादक, डॉ. मधु पंत, राष्ट्रीय बालभवन, नई दिल्ली, पृ.– 19–20
3.त्रिपदा– संपादक, डॉ. मधु पंत, राष्ट्रीय बालभवन, नई दिल्ली, पृ.– 11
4.बालहंस (पाक्षिक) – डॉ. विनोद, जुलाई प्रथम, 2003, पृ.– 19
5.बालहंस (पाक्षिक) – डॉ. रमेश चन्द्र शर्मा, जुलाई द्वितीय, 2005, पृ.– 30
6.त्रिधारा– संपादक, डॉ. मधु पंत, राष्ट्रीय बालभवन, नई दिल्ली, पृ.– 44
7.त्रिविधा– संपादक, डॉ. मधु पंत, अनन्त पै, राष्ट्रीय बालभवन, नई दिल्ली, पृ.– 14

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org